The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय समाज के रूपांतरण में तकनीकी आधुनिकता का योगदान

जयराम सहायक आचार्य

बी.एड. विभाग, शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648535

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-01-2026

Published: 10-02-2026

Keywords:

समाज, तकनीकी, आधुनिकता, रूपांतरण,।

ABSTRACT

तकनीकी आधुनिकता ने भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किए हैं। तकनीकी आधुनिकता से समाज के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्र के आधारभूत ढांचे में परिवर्तन हुए हैं। सूचना एवं संचार में टेलीफोन,प्रिंटिंग प्रेस एवं इंटरनेट जैसी तकनीकियों ने समाज, देश एवं विश्व में संचार को सुगम एवं सरल बनाया है। जिससे समस्याओं पर सहयोग करना आसान हुआ है। परिवहन, बिजली एवं स्वचालित प्रणालियों ने आधुनिक व्यवस्था को जन्म दिया है। ऊर्जा,स्वच्छ जल एवं स्वच्छता ने समाज के जीवन स्तर को सुधारा है। शहरीकरण ने ग्रामीण लोगों को शहर की ओर आकर्षित किया है जिसने नए सामाजिक मुद्दे एवं अवसरों को जन्म दिया है। टेलीविजन एवं मोबाइल फोन के आने के बाद शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र में क्रांति आ गई है। समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे संशयवाद एवं अवलोकन ने आधुनिक समाज की पहचान दी है । सरकारों को भी तकनीकी उपकरणों ने सामाजिक परिवर्तन को गति देने में मदद की है ।डिजिटल आधुनिकता ने जिसे सत्ता को बढ़ावा दिया है और उत्पादकता बढाई है । शहरीकरण ने पारिवारिक संरचना को बदला है। तकनीकी आधुनिकता ने समाज के रूपांतरण में संचार, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन एवं कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिससे लोगों की जीवन शैली में परिवर्तन हुए हैं और सामाजिक विकास, वैश्वीकरण एवं दक्षता में वृद्धि हुई है। परंतु

तकनीकी आधुनिकता ने समाज में असमानता भौतिकतावादी एवं सांस्कृतिक बदलाव जैसी चुनौतियां खड़ी कर दीं हैं जिससे मानवीय मूल्य एवं नैतिकता का ह्रास हुआ है। अमीर एवं गरीबों के बीच आर्थिक खाई बढ़ी है। शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल डिवाइड की समस्याएं देखी जा रही हैं जैसा कि वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा गया है भारतीय समाज में उपभोक्तावाद एवं भौतिकतावादी संस्कृत में तेजी से वृद्धि हो रही है संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है जिससे व्यक्तिगत रिश्तों में दूरी और नैतिक मूल्यों में कमी होती जा रही है। तकनीकी आधुनिकता ने समाज में पश्चिमी सभ्यता की प्रवृत्ति को बढ़ाया है, जिससे पारंपरिक मूल्यों का क्षरण हुआ है । बढ़ती वाहनों की संख्या एवं कारखाने से विभिन्न प्रकार की गैसें वातावरण में फैल रही हैं जिससे वायु दूषित हो रही है और लोगों को फेफड़े संबंधी बीमारियां बढ़ रही हैं वर्तमान में देश की राजधानी दिल्ली में AQI 700 के लगभग पहुंच गया है जिससे दिल्ली के लोगों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज से तात्पर्य भारत की उस बहुआयामी सामाजिक संरचना से है जो जाति, धर्म, भाषा , संस्कृति एवं भौगोलिक विविधता पर आधारित है यह एक प्राचीन गतिशील और समन्वयकारी समाज है जिसमें विविधता में एकता प्रमुख सिद्धांत है। भारतीय समाज सदियों पुरानी सभ्यता पर टिका हुआ है जहां विभिन्न समुदाय परस्पर निर्भरता के साथ सह अस्तित्व में रहते हैं यह पित्र सत्तात्मक एवं संयुक्त परिवार प्रधान है । भारतीय समाज सहनशीलता और समन्वय की शक्ति से संस्कृति संरक्षित रखना है जो संवैधानिक मूल्यों से मजबूत होता है । भारतीय समाज पदानुक्रमित है जिसमें ग्रामीण, शहरी और जनजातीय क्षेत्रों की विभिन्नताएं शामिल हैं। किसी भी समाज के रूपांतरण से तात्पर्य समाज की मूल संरचना, मूल्यों ,संस्थाओं और व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों से है जो धीरे-धीरे या आकस्मिक में घटनाओं से उत्पन्न होते हैं। रूपांतरण की प्रक्रिया सामाजिक मानकों एवं सांस्कृतिक प्रथाओं को नया रूप देता है भारतीय समाज में स्वतंत्रता संवैधानिक समानता,तकनीकी आधुनिकता से तात्पर्य उन नवीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी साधनों से है जिनका प्रयोग जीवन को अधिक सुविधाजनक, प्रभावी एवं तेज बनाने के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत कंप्यूटर, मोबाइल फोन,इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक

एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म शामिल है। तकनीकी आधुनिकता वह तकनीकी एवं वैज्ञानिक ज्ञान है जिसके द्वारा समाज में विभिन्न प्रकार की परिवर्तन हुए हैं। समाज अधिक तार्किक, सुविधाओं से सुसज्जित एवं विकसित हुआ है। मानव सभ्यता का इतिहास निरंतर परिवर्तन और विकास का घटनाक्रम रहा है आदिकाल से लेकर वर्तमान डिजिटल ऊतक समाज ने अनेक रूपांतरण का अनुभव किया है इन सभी परिवर्तनों के साधन के रूप में तकनीकी आधुनिकता एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली शक्ति है। तकनीकी आधुनिकता ने न केवल मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है बल्कि समाज की संरचना सोच व्यवहार संबंधों और मूल्यों को भी गहराई से प्रभावित किया है। आज का समाज जी तीव्र गति से बदल रहा है इसका प्रमुख कारण विज्ञान और तकनीकी में हो रही निरंतर प्रगति है। तकनीक आद्रता का अर्थ केवल मस्त नई मशीनों एवं उपकरणों का विकास नहीं है बल्कि है मानव जीवन के हर क्षेत्र जैसे शिक्षा संचार स्वास्थ्य उद्योग कृषि राजनीति और संस्कृति में नवाचार एवं दक्षता का समावेश है सूचना एवं संचार तकनीकी इंटरनेट कितनी बुद्धिमंता स्वचालन डिजिटल प्लेटफॉर्म ने समाज को वैश्विक स्तर पर जोड़ दिया है, जिसके परिणाम स्वरुप दुनिया एक वैश्विक गांव में परिवर्तित हो गई है जहां सूचनाओं का आदान-प्रदान क्षण भर में संभव हो गया है तकनीकी आधुनिकता ने समाज में सामान्य जागरूकता और सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षा डिजिटल पुस्तकालय और ई लर्निंग प्लेटफॉर्म ने ज्ञान को आम जनता तक पहुंचा दिया है स्वास्थ्य के क्षेत्र में तकनीकी ने जटिल रोगों की लाज को सरल बनाया है जिससे मानव की जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। तकनीकी आधुनिकता की सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आ रही हैं जैसे रोजगार पर प्रभाव, सामाजिक दूरी, निजता का संकट और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन । इसके बावजूद यह सत्य है कि तकनीकी आधुनिकता ने समाज को अधिक गतिशील, जागरूक एवं प्रगतिशील बनाया है अतः कहा जा सकता है कि तकनीकी आधुनिकता सामाजिक रूपांतरण की एक सशक्त धुरी है जिसने मानव जीवन की दिशा एवं दशा दोनों को बदल दिया है।

अध्ययन की उद्देश्य

1-समाज के रूपांतरण में तकनीकी आधुनिकता की भूमिका का अध्ययन करना।

2-सामाजिक संरचना पर तकनीकी प्रभावों का विश्लेषण करना।

3-तकनीकी विकास की सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को समझना।

4-भविष्य में सामाजिक स्वरूप की संभावनाओं का आकलन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है जिसमें पुस्तकें ,शोध पत्रिकाएं, रिपोर्ट एवं ऑनलाइन शैक्षणिक सामग्री का उपयोग किया गया है।

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी आधुनिकता का योगदान

तकनीकी आधुनिकता ने मानव समाज के स्वरूप चिंतन स्तर एवं क्रियाकलापों में गहराई से परिवर्तन किया है। विज्ञान एवं तकनीकी की प्रगति ने न केवल जीवन को सुविधाजनक बनाया बल्कि सामाजिक, आर्थिक,सांस्कृतिक, कृषि, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन भी किए हैं। वर्तमान में समाज की प्रत्येक कार्य तकनीकी पर निर्भर होते जा रहे हैं जिससे समाज का रूपांतरण तीव्र गति से हो रहा है।

सूचना एवं संचार के क्षेत्र में

संचार के क्षेत्र में तकनीकी आधुनिकता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है मोबाइल फोन,इंटरनेट और सोशल मीडिया ने आपसे दूरियों को खत्म कर दिया है। अब सूचनाएं बहुत कम समय में प्राप्त हो जाती हैं जिससे समाज में विचारों का आदान-प्रदान बढ़ रहा है सामाजिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी ने समकालीन भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्र बनाया है। 1990 के दशक में शुरू हुई आईटी क्रांति ने 21वीं सदी में अभूतपूर्व विस्तार देखा है। भारत का आईटी उद्योग देश की जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

आर्थिक क्षेत्र में

आर्थिक क्षेत्र में तकनीकी आधुनिकता ने महत्वपूर्ण परिवर्तन एवं प्रगति में अपना योगदान दिया है आज तकनीकी ने प्रत्येक क्षेत्र में उत्पादन क्षमता बढाई है और नए रोजगार के अवसर सुरजीत किए हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल भुगतान प्रणालियों ने कार्य करने की दक्षता में वृद्धि की है। ई व्यापार एवं स्टार्ट अपने उद्यमता को प्रभावित किया है जिससे आर्थिक संरचना में परिवर्तन आया है। औद्योगीकरण ने भारतीय समाज की वृहद संरचना को परिवर्तित किया है भारत में श्रमिक एवं पूंजीपति जैसी नवीन संरचनाएं उभरी हैं। डिजिटल इंडिया पहल जो 2015 में शुरू हुई थी ने इस क्रांति को जन-जन तक पहुंचाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने और डिजिटल भुगतान को प्रोत्साहित करने के लिए यह कार्यक्रम डिजाइन किया गया था।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में

सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन पर तकनीकी आधुनिकता का गृह प्रभाव पड़ा है आज परंपराओं को बनाए रखने एवं आधुनिकता को अपने में तकनीकी महत्वपूर्ण योगदान देती है तकनीकी नहीं विश्व को एक ग्लोबल विलेज बना दिया है वैश्वीकरण से संस्कृतियों का आदान-तन बड़ा है वहीं दूसरी ओर स्थानीय पहचान को बनाए रखने की समस्या भी आ रही है तकनीकी ने सामाजिक आंदोलन को गति दी है और सामाजिक न्याय की आवाज को व्यापक मंच प्रदान किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में

शिक्षा के क्षेत्र में भी तकनीकी आधुनिकता ने महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी का क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा है। डिजिटल पुस्तकालय ऑनलाइन कक्षा है और अधिगम प्लेटफॉर्म ने शिक्षा को अधिक सुविधाजनक एवं लचीला बनाया है आज कोई भी छात्र एवं शिक्षा किसी भी स्थान से जोड़कर अध्ययन अध्यापन का कार्य कर सकता है अब कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति से कहीं पर भी रहकर ज्ञान प्राप्त कर सकता है जिससे समान अवसर को बढ़ावा मिला है और समाज में बौद्धिक विकास हुआ है।

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में तकनीकी आधुनिकता द्वारा महत्व पर देखे जा रहे हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं विज्ञान प्रगति रेडियोलोजी डिजिटाइजेशन एवं ए एल्गोरिथम की मदद से सूक्ष्म असामान्यताओं का पता लग सकता है जिसे मानव आंख से नहीं देखा जा सकता है। 2020 में नेचर में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चलता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से बायोप्सी स्तन कैंसर की पुष्टि से संबंधित फॉल्स पॉजिटिव एवं फॉल्स नेगेटिव पहचान की त्रुटियों की दरों में 1.2% एवं 2.7% की कमी आई है वर्ष 2020 में इंसिलीकको मेडिसिन ने केवल 46 दिनों में फाइब्रोसिस के लिए एक नई दवा को डिजाइन करने, संश्लेषित करने और मान्य करने के लिए एआई का प्रयोग किया है। पारंपरिक रूप से ऐसी प्रक्रिया में वर्षों लग जाते थे। तकनीकी की सहायता से इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिपोर्ट तैयार की जाती है जिससे रोगी की जानकारी को सुव्यवस्थित करते हैं और इसे स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए आसानी से सुलभ बनाते हैं । पहनने योग्य स्वास्थ्य मॉनिटर जैसे स्मार्ट वॉच, फिटनेस ट्रैकर आदि उपकरण चिकित्सा पद्धति में महत्वपूर्ण सुधार एवं सुविधाएं प्रदान करते हैं।

कृषि के क्षेत्र में

कृषि क्षेत्र में तकनीक एवं वैज्ञानिक क्रांति ला दी है जिससे फसलों का उत्पादन किसानों की दक्षता बढ़ी है। यह मशीनीकरण, जैव प्रौद्योगिकी, सटीक खेती, बेहतर सिंचाई, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाता है ।तकनीकी आधुनिकता ने किसानों की आय में वृद्धि, खाद्य सुरक्षा एवं संसाधनों का बेहतर प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जेनेटिक इंजीनियरिंग में कट प्रतिरोधी और अधिक उपज देने वाली किस में विकसित की जाती हैं ड्रिप और स्प्रिंग कलर जैसी तकनीक के पानी की बचत करती हैं और पैदावारी बढ़ती है। ड्रोन और सेंसर द्वारा मिट्टी नमी और फसल की निगरानी कर सही समय पर सही मात्रा में उर्वरक और पानी पहुंचाने में मदद करते हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं डाटा एनालिसिस द्वारा मौसम, मिट्टी की स्थिति एवं बाजार की जानकारी के आधार पर किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद करते हैं।

तकनीकी आधुनिकता के प्रयोग से उत्पन्न चुनौतियां

विज्ञान एवं तकनीकी का प्रयोग मानव कल्याण के लिए आवश्यक है किंतु अनियंत्रित उपयोग से कई समस्याएं जन्म लेती हैं। विज्ञान एवं तकनीकी प्रयोग से उत्पन्न चुनौतियां समाज,पर्यावरण एवं नैतिकता के स्तर पर गंभीर हैं।

नैतिक दुविधाएं

तकनीकी प्रगति जैसे जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलें जो किसानों की आजीविका प्रभावित करती हैं। डिजाइनर बेबी नैतिक प्रश्न खड़े करते हैं तथा मानवीय हस्तक्षेप की सीमाओं को चुनौती देते हैं । भारतीय संविधान वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है किंतु शोषण रोकने हेतु मनको की आवश्यकता है।

सामाजिक प्रभाव

विज्ञान संचार में हिंदी जैसी भाषाओं में जटिल अवधारणा को सरल बनाना चुनौती पूर्ण है ,क्योंकि पाठक अक्सर अंग्रेजी आधारित सामग्री से अपरिचित होते हैं। प्रौद्योगिकी मानव को तार्किक से तकनीकी दास बना रही है,जिससे दर्शन और मानविकी कमजोर हो रही है।

पर्यावरण जोखिम

वाहनों से निकलने वाले धुएं एवं प्लास्टिक उत्पादन पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं। तकनीकी विकास से वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण में वृद्धि होती है जिससे पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ा है। नए रोगों का प्रसार और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भी तकनीकी के दुरुपयोग से हुआ है। आज सभी फसलों में कीटनाशक का प्रयोग हो रहा है जो कि मृदा प्रदूषण एवं नई-नई बीमारियों को जन्म दे रहे हैं।

गोपनीयता संकट एवं साइबर क्राइम

आज इंटरनेट एवं डिजिटलाइजेशन का उपयोग तेजी से हो रहा है। ऑनलाइन बैंकिंग, ऑनलाइन पेमेंट, ऑनलाइन बिजनेस, ऑनलाइन शिक्षा आदि में विभिन्न प्रकार के ऐप्स इस्तेमाल किये जा रहे हैं, इनका प्रयोग करते समय लोगों के गोपनीय डाटा सुरक्षित नहीं है। हैकर अवसर पाते ही लोगों के साथ ठगी करके उनके खाते खाली कर देते हैं, ऐसे देश में बहुत से मामले सामने आए हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

तकनीकी आधुनिकता ने मानव को निश्चित तौर पर सभी क्षेत्रों में सहयोग किया है और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तकनीकी आधुनिकता ने समाज की तरक्की को गति एवं दिशा प्रदान की है। सूचना एवं संचार के क्षेत्र में आज दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर हम बहुत कम समय में सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं और भेज सकते हैं। कृषि के क्षेत्र में आज तकनीकी की सहायता से उत्पादन क्षमता बढ़ी है,जिससे हम आत्मनिर्भर हुए हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में अत्याधुनिक मशीनों की सहायता से बीमारियों को डायग्नोसिस करना आसान हो गया है और दवाओं को डिजाइन करना भी सरल हुआ है। नहीं दवाइयों और सर्जिकल उपकरणों ने कैंसर, डायबिटीज जैसी जटिल बीमारियों का इलाज संभव बनाया है एम आर आई और एंडोस्कोपी ने निदान को तेज और सटीक किया है। तकनीकी के आने से शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं। आज छात्र किसी भी स्थान पर बैठकर योग्य शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं अपनी समस्याओं का हल प्राप्त कर सकते हैं। एवं शिक्षण सामग्री भी शेयर एवं प्राप्त कर सकते हैं। नवीकरणीय ऊर्जा, जल शोधन और ड्रोन निगरानी जैसी तकनीकें प्रदूषण को कम करती हैं। परिवहन के क्षेत्र में भी विज्ञान एवं तकनीकी ने अत्याधुनिक कारें, सुपरफास्ट रेल गाड़ियां एवं वायुयानों की सहायता से कम समय में एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा को आसान बनाया है। तकनीकी आधुनिकता के उपयोग से मानव जीवन सरल, तेज और सुविधाजनक हुआ है परंतु इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियां भी सामने आई हैं। तकनीकी आधुनिकता की प्रयोग से समाज में नैतिकता का ह्रास हुआ है। इससे विभिन्न प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण हुए हैं, ऑनलाइन

एप्स का उपयोग करने से गोपनीय डाटा की सुरक्षा पर संकट एवं साइबर क्राइम जैसी समस्याएं समाज में बड़ी मात्रा में देखी जा रही हैं। तकनीकी आधुनिकता से समाज के मानवीय मूल्यों में गिरावट आई है।अतः कुल मिलाकर विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति मानव जीवन को समृद्ध करती है और तकनीकी आधुनिकता ने समाज के रूपांतरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, परंतु जिम्मेदार उपयोग से ही वास्तविक लाभ संभव है। संतुलित दृष्टिकोण अपनाकर इनके दुष्प्रभाव नियंत्रित किए जा सकते हैं। तकनीकी आधुनिकता का उपयोग करते समय निम्न बातों को ध्यान रखा जाना चाहिए-

1- लोगों को विज्ञान एवं तकनीकी सही उपयोग एवं दुरुपयोग के परिणाम के बारे में शिक्षित करें ताकि जिम्मेदार व्यवहार विकसित हो।

2- कठोर कानून बनाए जाए जो जीन एडिटिंग या खतरनाक तकनीकियों के गलत उपयोग को रोकें, प्रयोग से पूर्व विस्तृत जांच अनिवार्य हो।

3- हर नई तकनीक अपनाने से पहले उसके पर्यावरण एवं समाज पर प्रभाव का आकलन करें तथा संतुलित उपयोग सुनिश्चित करें।

4-वैश्विक संधियां लागू करें जो जैविक हथियारों या एआई दुरुपयोग पर प्रतिबंध लगाएं। नियमित अंतर्राष्ट्रीय निरीक्षण और सूचना साझा करने की व्यवस्था हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1-"digital India programme" ministry of electronics and information technology,Government of India.link
- 2- Tandon A, and Garg p.(2020), Impact of Artificial intelligence on Indian Healthcare Industry.Journalof AI research,45(2),101-112.
- 3- Mehra,S.(2021) Telemedicine in India:A boom during the pandemic, Healthcare today,18(3),73-88.
- 4-Singh,K.and Rao,A.(2019),The role of E-learning in Indian Education: Opportunities and challenges.journal of Education technology,26(1),45-60.
- 5-"India's Internet Usage Statistics", Internet and Mobile Association of India (IAMAI),2023.Link